

(1)

॥३८॥०॥२४॥

॥श्रीरामविजयपंचयत्तरणलिसावाजाध्यायप्रारंभः॥



"Left profile of the Rajawade Amoghosh Mandal, Dhule and the Yasho Chavan Panchayat, Muntakir."

(२)
॥श्रीराम॥

॥१॥

श्रीगणाधिपतयेनमः। रघुवीरकथापरमपावन॥ सुधारसाहूनीगोडगहना।
देवकरीतीसुधारसपान॥ कल्मांतीमरणनचुकेकी॥ ॥१॥ जम्रतगोउत्कोगेरसे
नेशी॥ परीतुत्तमनकरीनेब्रकथाधिती॥ रघुनाथकथानक्तैशि॥ सर्वउद्दीया
शीत्यकरीसुधारसेशेवीतं मद घट॥ कथास्तत्सेवीतामेदमछरस्तोप्रवि
धातापदुःखसाकड॥ सहस्रनप्तम् ॥२॥ कथास्तकरीताश्रवण॥ जेक
रणारसुधारसपाना॥ याचीयेम् ॥३॥ द्युकीचरेणी॥ कथानेतपेलीकडे॥ ॥४॥
जम्रतोसउद्दिरक्षीत॥ संवेलोर्दर् रामवृथास्त॥ खरिहाणारसमल॥
सदाईछीतरामकथा॥ ५॥ लेकथासुधारसपावन॥ श्रवणकरातुम्ही
भत्कजन॥ गतगथाध्याइरीवष्टयउन॥ रणमंडकीउभाठकृत्का॥ ६॥ घ
उनियाँशीवातस्वर॥ वर्षउल्कागलंरीसकाम्भर॥ सेजामुखीस्त्रौवतार॥
र

(2A)

उमाहेरविलाईद्विजितेऽपि ॥७॥ परमदुरासातोरवणि ॥ अंतरिक्षापट्यविचास्मरेनि ॥ द्वित्रिमज्ज्ञान
 किंनिर्मुनि ॥ रथावरिवेसविलि ॥८॥ तसकोंबनवणेवेल्हाडा ॥ वस्त्रांसरणिमंडितसद्गङ्का ॥ मु
 स्त्रशशांकुलितिनिर्मका ॥ विनाडातसर्वेलहणि ॥९॥ हेल्हत्रिमसपनिमिलेऽहेंकोणाशिनक्क्ले ॥ ब
 हुतविच्छणपडरिजाते ॥ नहिसाचमानिनि ॥१०॥ असंहत्रिमतपनिर्मुना ॥ ईद्विजितस्मणहनुमं
 तालायुनी ॥ अरेपोहेंजनकनंहनि ॥ दुष्टांशिणिवान्नरा ॥११॥ हेलुस्यारामचिंगनाहो
 या ॥ ईणोआमुच्चाकेलाकुक्कहया ॥ त्रेतायुग मा पोहें ॥ हस्तोहेवठडान्नलि ॥१२॥ अंचवटिपासु
 निसाचारा ॥ ईजकरिलांसंकरिलेजसुरा ॥१३॥ जलिकायामोहोहरा ॥ देवांतकनरांतकपै ॥१३॥
 कुंभदणाहियामिनिचरा ॥ ईणोतेचग्रासिलस्मया ॥ हेवस्यलसुहरा ॥ अणोनिरायेबाणिलि ॥१४॥
 हृदवनवरिहिसेसुढाका ॥ किंकणसफळहणेनिघेतलेंकनकफङ्का ॥ किंहुमुख्यहरस्तणेनिर्वांक
 पाका ॥ सर्पहानिधरियेल्हा ॥१५॥ किरलेंसुहरस्तणोवा ॥ रवहिरोगारघेतलेभरोना ॥ किनक्षत्रविं

(3)

प्रीताम् ॥
१२॥

बजविदेस्वोना ॥ व्यर्थीचिजाकेपसरले ॥ १६॥ औसेंईसलंकेसज्जापुना ॥ व्यर्थकष्टलाद्वावदन ॥
 हेपमिणककहुकामिजा ॥ राहस्यवनजाकिले ॥ १७॥ औसिरेपरमचाडाकिया ॥ ईसव्यर्थजातां
 कायरेउन ॥ ताल्काकशस्त्रकाढुना ॥ छत्रिप्राणीत्ययेलि ॥ १८॥ लिचेंशिरस्वंडुन ॥ दाविलेमा
 जलिलायुन ॥ हेरामादिसांगजाउन ॥ जायउठानिल्योध्ये ॥ १९॥ औसेंबोलतांईडीजूता ॥ नि
 कुंबकेशिगेलाबरित ॥ हवनजारंप्रिले प्रयाय ॥ अहस्यरथकाढावया ॥ २०॥ ऊसोइकडेंज
 निनंदन ॥ यानकिवधिलिदेवोना ॥ नहर उठउना ॥ अरणिसपउलामुहिता ॥ २१॥ घटिका
 यक्षपर्यत ॥ निवष्टेलपउलाहघुमंल ॥ साद गविक्रिचित ॥ शोककरिताबाहुला ॥ २२॥ फुंह ॥
 फुंदारेमालति ॥ आतांकायसांगोरघुपाति ॥ शिलेकारपानहानत्रि ॥ खमिमाज्ञतिएतजस्मा ॥ २३॥
 शिलेवेस्वनपमणोन ॥ हद्देँधीरत्तपाषाण ॥ मित्रसुलमित्रकलन ॥ शाकसुतवधियला ॥ २४॥ ऐ
 लक्तनिवहुत ॥ म्याशिताशुद्धिकेलियथार्थ ॥ वातासांगोनिरघुनाथ ॥ सुखिकेलालेकाकिं ॥ २५॥

॥ विजया ॥
१२॥

(3A)

तेपासुनिशिताद्वोक्त्वारणा। मजनावर्तेक्रम्युनंदना। तेमिहस्माचास्वेऽन्। कैसाजाउस्वमिपा
 यि॥२६॥ शरजाक्षिपडविसेनासमस्ता। तेघुनिजालंगोपापर्वता। संवेषेनिरघुनाथा। कामयक
 मित्रेभक्तेहेमरणा। गैरववक्तुतमजादिधला॥२७॥ तेक्ष्णस्वर्वक्तेलव्यर्था। मिभजागिहोययथा
 थी॥ जातांवार्ताभैकतांचिरघुनाथा। कायक्तरतेवक्त्वहिं॥२८॥ पुर्विम्यासंगितलेरघुनाथा॥।
 किसुरवीबूहेजनकहुहिता॥ जाताजानंकिनीधिलेहवार्ता॥ रामचंद्रारिकेविसंगो॥२९॥ जेपे
 दिधलंपुर्विधना॥ तेपेचपुक्काबेलंहिरेजा॥ खपत लेबक्तुतपाक्षणा॥ लेपेचमरणयाडिलं॥३०॥
 डेपेसुखदिधलेजन्मवरि॥ तेपेचलोटिलंहुरवभुद्रिं॥ जक्तेवरिरघुनिकाठिलेवोहीरा॥ तेपेच
 चरिरघुद्विले॥३१॥ त्पाक्तांतप्राणिवनिपाडिला॥ ताजिवनहेउनिवंचविला॥ स्वेच्छात्याव
 धात्रवर्तला॥ शस्त्रघुनिस्वहस्ते॥३२॥ तेसमिरामात्रतिलाउना॥ कैसेहेसंगोवर्तमान॥ मध्ये
 चगोषिज्ञाओना॥ तेपेदुषणलागत्से॥३३॥ जेसेकिचिरत्तहनुमंता॥ सत्वरबाला जेघेरघुनाथा॥

५

स्वीराम ॥
॥३॥

अधोवदनेकुंहता ॥ सवाभितकपिजाले ॥ ३४ ॥ गजबिजिलेरमलहुमण ॥ मातलिसपुसेसुमित्रा
 नंरन ॥ हनुमतेवक्षस्त्वक्त्वउन ॥ आकंदोनिसांगतसे ॥ ३५ ॥ ड्यानकिबाणोनिरणागणि ॥
 ईजितेरकिलिवधोनि ॥ असेंछेकतांसापाणि ॥ दुखेक्तनिउचंबक्ल ॥ ३६ ॥ आकर्ण
 नयनचांगले ॥ असुजिवनश्वोलाले ॥ यक्तविहाहकारतेक्ले ॥ रामसेनतजाहाला ॥ ३७ ॥
 मंगक्लनयतोरहुनंहन ॥ मंगक्लभगिन्चनारति ॥ विलापकारितांलहुमण ॥ यउनिचरणा
 लागला ॥ ३८ ॥ न्यणोञ्चसांडनायकारधुपति ॥ न्यणोमायचिकायक्तिरवंति ॥ जाकारासभा
 लेतेपुढलि ॥ नांशपावेलनिर्धारें ॥ ३९ ॥ विनक्तविनक्तविन ॥ मोहोपर्वतकरावत्तुर्ण ॥ सहुतवरि
 एजाणा ॥ नुपुरिविकविले ॥ ४० ॥ तुदेवधिद्वपरब्रह्म ॥ अजभितजालाराम ॥ लुसेमायचा
 संक्षम ॥ मिथ्यामयलटिकाचि ॥ ४१ ॥ ड्यानकिपावलिमरण ॥ तुजकोरेजाईलठाङ्कुन ॥ दिपाल
 प्रभावोसांडुन ॥ जाईलठेतोनघोडचि ॥ ४२ ॥ छनकाशिटाकुनिकालि ॥ जाउनराहिलकेतुति ॥०

॥विजया ॥
॥३॥

(5A)

रलाससांडुनिहिसि। जोईलहेंतोंधडेबा॥४३॥ अबहितुंलिचानाथ। तुजचियावेलयथार्थ॥
 जैसापार्वतिनेकैलासनाथ। पुक्काउपजोनिकरियता॥४४॥ आतांयावरिजैसेंकरिन। सहपर
 वरेवथुनिरावण। वंहिचेदेवसोउउव। स्थापुंविभिषणलक्षेशि॥४५॥ ऐसेबोलतासुमित्रानं
 दन॥ अधोवहनपाहेरधुनहन॥ चित्रकालवाजनरगण॥ तदस्ततपपाहाति॥४६॥ लोंविभि
 पणाचेदोद्येवधान॥ ओलज्यानकितिरु^{अश्वरु}॥ हस्तचिरावणानुजयतन। रामाजवलि
 सांगतस्य॥४७॥ लुणजगद्याच्यापपाणि॥ सुरनजाहुजनहनंहिनि॥ म्यालंकेशिदुतपाठउनि॥
 समाचारभाणीविला॥४८॥ ईक्कजिलपरमक्^क। उटिचवधिलिरितागोरटि॥ हनुमतनिःकप
 टपेटिं॥ ट्याससत्यवाटलें॥४९॥ ऐक्कतांविभिषणाच्चवरन॥ जयजयकरेगज्जेतिकपिगण॥ वहन
 टवटविलपुर्ण॥ जानंदगगनिनसमाया॥५०॥ उदयादिवरिउगवेगमस्ति॥ येक्कहंचिनिधे
 तमाचिहुषि॥ तेशिजलिदुखनिहति॥ विभिषणवा त्तान्सोगला॥५१॥ किहरईवधटतांवे

(5)

॥श्रीराम॥ दांत॥ जाव॥ सहपरिवरेंजायबज्ञान॥ किंग्रहस्वमिदेरवतांउठोना॥ तस्कृतपवतिलवदे॥ ५३॥

॥४॥ किंसुधार्थिपित्तांबन्देविना॥ तोऽहिराव्युपुढेबालाधांवोना॥ किवारणगंडितांपंचानन्
होकफोडुनिधांविष्वला॥ ५४॥ (रोगंव्यापिणेवदुवसा॥ तोवेद्येंपजिलासुधारसा॥ जैसेंवोततो
विभिषणास्य॥ मिथ्यासर्ववाटले॥ ५५॥) विभिषणपवनेपौर्णमायोरा। कक्षासुलदिस्मेरामचं
डा॥ उचंबक्त्ताक्षपिसमुडा। सुखभातेशट्टा॥ ५६॥ विभिषणास्मनेरघुनंदन॥ तुस्याउ
पक्षारानकुठतिर्ण॥ इष्पह्याणाभात्माक्त्तायुन॥ सा भ्रात्तिविप्राणसरिवआ॥ ५७॥ अस्ते श्रीरामा
च्यक्तर्ण॥ विभिषणसंगेलेष्वणि॥ ईद्री, तनि, ठेबक्षमुवनि॥ कापटयहवनजारसिले॥ ५८॥
होमधुमेंकोडिलेलंतराक्ष॥ अनितुनियारथसवक्ष॥ होमातुनहाटलाप॥ रिमक्ष॥ अर्धवा
हुनविधाला॥ ५९॥ अश्वसारथिध्वनुष्ववाण॥ यासीहिलतोनिध्वस्यंदन॥ कार्यसिध्वजालि
यापुण॥ मगरावणिनाटोपे॥ ६०॥ च्यारवेक्षिंद्रजिलवयउन॥ रणिगेलाजवधेउन॥ ६१॥

॥विजय॥
॥४॥

आतां तो होमविष्वं सुन ॥ ओष्ठिसत्वरटका वा ॥ ६ ॥ विलंबक मित्रां होयथा ॥ लिक्तेविदेल अ
 वधारथा ॥ रथनिघालियाइङ्गजित ॥ काळत्रैं नाटोपे ॥ ७ ॥ द्वाहशवर्षनिराहनि ॥ असलजा
 त्रहस्त्यारि ॥ याच्चाहातेशक्तारि ॥ मरेहूजैक्षमविष्या ॥ ८ ॥ असेवोलतां रघुवंदन ॥ सौमित्रा
 क्तेपाहेजवतोकुब ॥ ताकोक्तव्यपुष्टासलाहनगुण ॥ लक्षुमणउभावकला ॥ ९ ॥ सौमित्रा
 विकाळदशाहेरवोनी ॥ परमस्त्रोहवेष्टिल ॥ १० ॥ अवृजासहहृङ्कवकावि ॥ मंत्रकर्णि
 संगतसे ॥ ११ ॥ कोणमंत्रें कोणभन्त्रो ॥ १२ ॥ समरेत्ररावें कोणशस्त्रें ॥ लेन्तेसर्वराजिकन
 त्रें ॥ सौमित्रासहनाजाला ॥ १३ ॥ मरत विनिर्विग्रहपाहस्त ॥ सत्वरवधोनिर्दिग्जित ॥ उयला
 मध्यरनिवरिता ॥ कल्पाणतपयईंडे ॥ १४ ॥ सवनान्तिभाणिविभिषण ॥ परमनुहितक्तक्त्र
 विष्या ॥ श्रीरामेत्थरनिलक्षुमण ॥ त्यांचेहलिंदिधला ॥ १५ ॥ नक्तिविक्तजां बुवंतजंगदा ॥ गवयग
 वाहसरधमेह ॥ फणसक्तरारिदधिमुखविधि ॥ विरजगाधनिधाले ॥ १६ ॥ अणिकजसंरब

६

॥श्रीराम॥ ५४॥

निघतिवांकरगण॥ पुढेमार्गहवित्तविजयण॥ निकुंबकागउपरमकृष्णण॥ कंकेहुनिकगाध॥
 ॥६॥ अंगदाचेस्कहिनहुमण॥ डोसालेरावतावरिसहस्रनयन॥ पुढेकेडलागलेकृष्णण॥ स
 गविभिषणबोलत॥ ७॥ लूणोभवधेउडेना॥ निकुंबकादुर्गवोलाङ्गुब॥ इक्कजितकृष्णवन॥
 अधिविष्वंसुनटाकालेन॥ ७॥ मगनिकमाणतवछ॥ भवधिविकुंबकेलप्रवेशला॥ तोंसे
 व्येंदुर्गलवेक्के॥ सालउत्तरावकलेथेरहि॥ ८॥ तष्टमगवयहुनुमंत॥ वेउनियांशिक्कपर्व
 त॥ जोथेहवनकर्ईद्रजित॥ साविकरांल लवला॥ ९॥ तोंतेसोवतिमुतंराहिति॥ निरुक्ति ॥७॥
 सोउनपक्कविमानति॥ तवतोईद्रजितपाद उद्ग्रासनिवैसला॥ १०॥ रकोहक्केस्कानकल
 गि॥ रकक्कत्रेनेसलासावण॥ भस्त्रेतंपसरेनि॥ त्यावरिक्कसनधातलें॥ ११॥ पिंगटजटामा
 केटहिसति॥ रकोहक्केथवथबांगक्कति॥ नेत्रलाउनिजाहुति॥ टाक्कितजसेखरेनो॥ १२॥ ज्ञा
 न्मणाचिंशिरेबहुत॥ जवक्किपउलासेपर्वत॥ अस्तिमाकागकोडोक्कल॥ उरगमुत्सिरिवेष्टिलो॥ १३॥

द्विजहांवाच्यलिह्याकर्तनि॥ साजुकमासधालिरुवनि॥ रथनिधालाभिग्नितुनि॥ लरणिहुगिलेजा
 क्षा॥ ७८॥ प्राप्तहोतंद्विवनिधान॥ अभाग्यावरिपेत्तेविद्धा॥ तेस्मैश्वर्मनंपर्वतवकुना॥ होमकुडविष्वं
 शिलेण॥ ७९॥ अनग्नचोहुक्तेविस्वरत॥ कोपलेवागस्यदेवता॥ अग्निनेगिक्षिलामाघारान्था॥ परम
 अवर्थजाहाला॥ ८०॥ इङ्गितिस्वेष्टिवरी॥ वृषभेहुधर्मकरि॥ यज्ञपात्रक्षादुग्नितवकरि॥
 होमद्रव्यउल्लिङ्गिति॥ ८१॥ गजरक्तनिपुत्रावत्ता॥ मावधजालईङ्गिति॥ हेत्वेनियांतेविपरिता॥
 पूरमदुःखिनेतेवेक्षा॥ ८२॥ अणेहवलक्षोपलभवत्॥ कैसिवैरियानिसाधिलिवेष्ठ॥ माझ्याजायु
 ष्यसेहुतेजक्षा॥ जाजिपासानिजाटत्ते॥ ८३॥ वात्तरतेषुनिगेत्तस्मस्ता॥ परमकोपलईङ्गिति॥
 वेगेंजाएनिहिव्यरथ॥ वरिजात्तद्वात्तकाढा॥ ८४॥ अनुत्तहक्षयेत्तनितेवेक्षा॥ जिदुंखक्षबोहर
 जात्ते॥ तोक्षपिसोरंद्विंउभेवाक्षत्ते॥ सौमित्रहेरिविलईङ्गिति॥ ८५॥ अग्यामाजिरोहिणिवर॥
 किर्णचक्रात्तद्विनकरा॥ तेसावाज्ञरात्तसौमित्रविरायुज्याससिष्ठुत्तमाभस्तो॥ ८६॥ कुक्षक्षक्षक्ष

४५॥
अरीमा॥

लमेसज्जुता॥ लैसरथसठदिसईडजित॥ लोराहसलोटलेसमस्त॥ वाङ्गरवरिलेकान्धि॥ ८७॥
शिठाङ्गुमपर्वतघेउनि॥ कीपिवरिधांविलेतेहापि॥ राहसदकहेनबाटिण॥ त्रेतेंजवनिलपउता
ति॥ ८८॥ शुक्लआरिल्लतागदाशलिक॥ हेजायुधेघनियांहाति॥ वाङ्गरांशिअसुरखोचिति॥
कीपिपडतिविक्रक्तनेण॥ ८९॥ नोजकनिक्कांबुवत॥ त्रिवापवंतजंजनिसुत॥ याचामारभतिज्ञु
ता॥ जटिलेबहुतनिश्चरग॥ ९०॥ अरीमता॥ नेबहुता॥ परमक्रांधावलाईडजित॥ हामनि॥ विजया॥
झंसिलातेविषाहवहुत॥ हांतखातकरक॥ ९१॥ लोतेनेताडिलाउरग॥ रववकेझुंडापिक्का॥ ९२॥
मलांग॥ किंनारिकिलाडिलासवेग॥ माहु-या॥ नदेविरववक्ष॥ ९३॥ किमाहालपस्विभयमा
निला॥ किंधृतेहुतांशानशिपिला॥ लैसाइडजितह्योमला॥ वेणितेटिलारथपुढे॥ ९४॥ द्रिए
देरवतलांवारण॥ रववकेडैसायन्नानन॥ लैसाह्योमलालहुमण॥ भोगेंडपुणबवलरला॥ ९५॥
विद्युत्त्रायन्नापचडउन॥ त्यावरियोजिलादिब्यबाण॥ सिक्कनाहेगजौन॥ राघवानुजसरसविला॥ ९६॥

मातिलेनेक्षदेक्षेणा।।कौतुकपाहनिसुरगण।।सौमित्रहोकल्याण।।रेचिदेवचिंलिलि।।९५।।
 ईदीजितस्तपेसौमित्राशि।।मजशियुध्यकरशि।।जेसाहरिनशार्दुक्षाशि।।ज्ञांविद्यावयापात
 ला।।९६।।सुपणावरिधावेभक्षिका।।किमतंगावरिगौवच्छहरवा।।किवकेंधावेपिपलिका।।के
 नकाचक्षुचलावया।।९७।।उर्णेनामिभविमनि।।चतंतुवस्त्रेजाकिनभवनि।।किरस्त्रीकनगि
 उआरनि।।तटिनस्तपेसवहिरंगरा।।९८।।सुयोजिकेनल्पणेरवयोत।।मष्ठिकामुगोक्षत्वलघं
 ईचित।।वडवानक्षधगध्यगित।।पर्णगध्यावेशसावया।।९९।।मजशिलेसायुध्याशि।।मानवातु
 आलाशि।।माझेवाणेकविसाहाशि।।सन् नक्षते।।१०।।यवरिबोलेलस्तुमण।।वुज
 द्रिष्टिसतोलाहन।।प्रसमेभाल्याहिलाहुलाशन।।हपणेकाननजाक्षिलं।।११।।द्रिष्टिसबप्र
 रक्षेवरि।।परिस्तपेसाहागजाशिविहरि।।वज्रधाकुटपरिरुमि।।कुर्णसक्तनगच्च।।१२।।
 रुजरटहिसवामन।।परिडांगेजाटित्रिसुवन।।धटोङ्गवाचितनुलाहन।।परिसागरसव

८

॥४॥ प्राशिला ॥५॥ विमणचिह्निसेचंडश ॥ परिमेहिनिभरेष्टकाश ॥ तेविंनरविरराध्यवेद ॥ त्यत्वा
 ॥६॥ दासमिजसें ॥५॥ लुजभाडिसमरंगणि ॥ खंडविरवंडकरिनबणि ॥ दिव्यवाणिते
 अवसरि ॥ सेडित्वाराध्यवानुलावरि ॥ ब्रह्मयनपवेसरिवा ॥ गा. जेसासदिवेक्षेकरवा ॥ जानिको
 घरवंडपुणि ॥ लेसासेमित्रेनेडिलावाणि ॥ निर्वास रसेष्टुनिया ॥ या। परमहोमलाईंडिल ॥ ॥ विजय ॥
 चाप्पाचान्नान्नपटिल ॥ तोयेकचिद्विषयि ॥ गासुला ॥ मिठकलनिटाक्किल ॥ ९॥ उगवतांका ॥७॥
 सरमणि ॥ भग्योलपत्तिजेविगगनि ॥ किंजक्कु जाक्कततक्षणि ॥ ब्रह्मंजनविष्वंसिल ॥ १०॥
 किंजबुलापप्रवरतांबंलरि ॥ लरिबहुतयापांशसंकृति ॥ विभालझानेजेविहारि ॥ संसा
 रहुरवेलनेक्क ॥ ११॥ लेसेईडिजितान्वेशरपाठि ॥ तोंजनिकाचाक्कनिईजांवई ॥ वापासर्वे
 तवलग्नि ॥ छेदुनिपाडियकिक्क ॥ १२॥ सौमित्रसेडियक्कशरा ॥ त्यापासुनिकाया निधीतिबपार ॥

Samudra Manthan Manuscript
Sahitya Akademi
Digitized by srujanika@gmail.com

जैसायेकुल्लायकरुपत्र ॥ वोडेसंततिबहुत्याचि ॥ १३ ॥ डैसालेकविंदुजिंपउतां ॥ पसरवैकडेत
 लवा ॥ किसत्यनिंहानेता ॥ किर्तिप्रघटेसवंत्र ॥ १४ ॥ किंकुरवंतदिउपकारकरितां ॥ येशाम्रक
 टेनसांगलां ॥ यैसायकबाणस्योडितां ॥ पसरतिपहुंकडे ॥ १५ ॥ लक्ष्मावेलद्यवाण ॥ सोडितसेसुमि
 वानंहन ॥ ईद्विजिनेतितुकेछुन ॥ येक्रिजडपातितपै ॥ १६ ॥ ईद्विलतुकाविमान ॥ लणेघन्यकिर
 लहुमण ॥ रथधिरन्त्वक्तेगण ॥ योध्यानिपुणह ॥ १७ ॥ असोईद्विजिनेजपोनिमंत्र ॥ सोडिलेलेक
 व्रजन्यासत्र ॥ हास्तिशुंडाभेशिआरा ॥ मेवज ॥ रति ॥ १८ ॥ औसेहरवेनिलहमण ॥ वातासेंज्ञाना
 टिलाप्रजन्य ॥ डैसेंवैरायपघटनांपुणी ॥ १९ ॥ रवविसदे ॥ १९ ॥ परिवान्तसुट्लाबहुता ॥ ईद्विजि
 तास्वकटकउडन ॥ रावणिगेमाहापर्वत ॥ ओड्यातलावातशि ॥ २० ॥ डैसेमायाजाक्षभुल ॥ ते
 सेबाउद्दिसलिपर्वत ॥ मगसोमित्रेवज्ञेवहुल ॥ सोडुनिनगफोडिले ॥ २१ ॥ करितांसादासारश्चवप्य ॥
 क्रोधजायवितकोन ॥ तैसापर्वतफोडुन ॥ यवाप्यष्टवलकेला ॥ २२ ॥ मैगलोसुलाच्चनवरा ॥ सो

१

॥श्रीराम॥ डिताजालान्वजस्त्रा॥ यावरिदस्त्रयिविरा॥ सागरस्त्रयोजितसे॥ २३॥ सागरस्त्रदेव्योनि॥
 ॥८॥ अगस्त्यमंत्रजपेरावणि॥ तात्काकस्मुद्रशोकुनि॥ स्पृष्टमात्रं राजिला॥ २४॥ पापास्त्रसे ईद्रजि
 ता। नामास्त्रसो डिष्टुमित्रासुता॥ रावणिमाहेष्वराषेरित॥ ब्रह्मास्त्रसो मित्रजपतसे॥ २५॥ ब्रह्मा
 स्त्रवतिश्रष्टा॥ तेष्माहेष्वरथाहिलेसमस्त॥ डावुवलबाणिहनुमंता॥ तटस्तपाहातिकोतुकां॥ २६॥
 परमकोपाचवड्डाहावणि॥ पांचबाणकांडा
 इुष्मि॥ किल्यापांचसैहातिनि॥ मेघाबाहूरनि
 धाल्या॥ २७॥ तेजानिवारपांचबाणकांडा
 मित्राच्चहर्ईभरले॥ औक्ष्मातलेसमई॥ ॥विजय॥
 जोकर्णपर्यंतलेवेदिलो॥ २८॥ मेतमांद्रस्ते
 नै॥ जैसेक्षणेरपांचबाण॥ भोगेद्वत्तारलहम् ॥९॥
 ण॥ तेष्वेवेद्यास्त्रेत्तिलेते॥ २९॥ नवलोवाक्षिच्छासुना॥ सेडिताजालानवबाण॥ ईद्रजिताचेष्टा
 इना॥ जोलसंपुण्णरतले॥ ३०॥ ईद्रजितयोष्यादातण॥ ब्रह्मदशावेष्टिलहुमण॥ र्वेन्द्रां
 दोनिविभिषण॥ गदास्त्रेलितपुढेजाला॥ ३१॥ गदास्त्रेकाउनिलेवेक्ष्मि॥ ईद्रजितावरिटाकिलि॥

येरं शरसो दुनिपाडिलि । यक्षिकडेबाडविते ॥३२॥ मेघनोदं सो दुनिपांच वाण । हहई शिक्षिला
 विभिषण ॥ जो बुवंतेलंदे रवोना । पुढें धांवेकाळ डौसा ॥३३॥ वज्रपर्वतावरिपडेनक्षमात् । तेसा
 रावणिवरिधांवेजांबुवता । हस्तचपेटेत्यावारथा ॥ बांखास कित्तुर्पकेला ॥३४॥ विरथः
 उनीश्वरिजिला ॥ चुमिवरियुध्येकरिला । तों हनुमतं विद्याकर्पर्वता ॥ रावणिवरिटाहिला ॥३५॥
 नवनिकरपमजंगदा ॥ शरभगवयगवा ॥ ॥ केदरिपावकलोचनमेहा ॥ यक्षदंचित्ता
 वले ॥३६॥ शिक्षापर्वतलेभवसरि ॥ टा ॥ बृंदाकावरि ॥ हवपाहातिभवरि ॥ इव जु
 क्षपरमयुध्याचे ॥३७॥ ईश्वरितचलुरबडु ॥ मपराक्षमिरणपंडिता ॥ लिनुक्ष्यान्तेपर्वतफा
 डिता ॥ बाणजाक्षलोनियां ॥३८॥ ईश्वरितक्षटकातुनउडाला ॥ मेघाभाडजाउनिवैसला ॥ त
 थुनिवर्षठलागला ॥ बाणजाक्षलेधवां ॥३९॥ लहमणाच्चित्ताणमोठेगोजिरे ॥ मगकायकेले
 वायुकुमरे ॥ तक्षहातिसोमित्रलरे ॥ उभा कर्तनिरउडाला ॥४०॥ द्वादशगावेईश्वरिजिला ॥ शलया

१०
॥ श्रीराम ॥
॥ ४३ ॥

योजने हनुमंता । संथामकेलाबज्जत । उत्तरे इक्रजित पृथिवी चरि ॥४३॥ रवोलेउत्तरलालहमण
दोसमस्तक्रपिगण । सोमित्रासचिति तिक्तल्लाप्ण । विडाई पुर्ण हो बाजि ॥४२॥ पठिशिवं
बरं चेसार । जावेझोंगर्जलिवारं वार । माडें परमधन्वक्र । अनिवार विरहो धोइ ॥४३॥ यस
कृनाह करन । हो धीहिवाडविति गगन । महावैशंसंपुर्ण । ब्रह्मांड ग्रामुं पाहा लिव ॥४४॥ हो धो
चेआगिं रत्तलेइर । जैसपिछें पसीरलिन यर । ब्रह्म वत्सकुट लेत्रणो कुर । तैसविरहिस
लि ॥४५॥ याउपरिविरसोमित्र । नुनियों नुनकार लावारा किशिवने त्रां तुनवेश्वान्नरा । अकृस्मा । विजय ॥
लघगटला ॥४६॥ जैसामाध्यानिच्चागभी लिव शिवापाचिमुखवासति । त्याच्याकिष्ठेप्रका
शिलिहसति । नलह्यवेजि कोण्ठातें ॥४७॥ रामबामुं दांकिता । हैदिष्यमानसमर्थ । सोमि
त्राचामनोरथ । पुर्णकर्त्ता निर्धारें ॥४८॥ स्मणे पुर्ण ब्रह्मसनातना । मायालिलशुद्धचेतन्य ॥
ताहासुर्यवंशीरचुनंदन । जैरिहेसचिजासला ॥४९॥ स्त्रिअसेनिमित्रहृच्यरि । चलुर्दशवनषेनिराहारि ॥

(१०८)

कायावच्चामनें अंतरि । रामउपसक्तजरिअसे ॥५०॥ मंगठमग्निजग्नाता ॥ मत्यबसेलतेप
 लिहता ॥ रामदास्यतहुमंता ॥ जरिसाचधडलेअसेता ॥५१॥ शिवकंटिंचेहकाहक ॥ रामनामदान
 असेल ॥ लरिईद्रजितचेशीरकमळ ॥ येणेचवायेचवउत्तयो ॥५२॥ भैसेत्तिंतुनिनिजमनि ॥ बाणस्याइला
 लयहणि ॥ शक्तिजिताचाकंठतहुनि ॥ गगनप्रागडानसा ॥५३॥ यवरिविवालिनेत्रपुत्र ॥ बाणदेशनो
 निपरमलित्र ॥ धनुष्यावरिघालिचर ॥ बावर्षीसत्ता वौठिल ॥५४॥ लोईलुकियांतबकस्मात् ॥ बाण
 लोपावत्ताछतांतवत ॥ लेणकेउचाणिचुजा चरि ॥५५॥ धदुनिवेतिगग्नमार्ग ॥५६॥ वक्त्रसुरिवेष्ट
 हित ॥ छषिवक्त्रयसेबकस्मात् ॥ तैसकुडाना डुल ॥ बाणेनेलेनेकाढ़ि ॥५७॥ झुजउसक्तोनि
 अकस्मात् ॥ लंकेवरिजाउनिपउल ॥ कंदुकजेसाअकस्मात् ॥ येउनियांपाडियला ॥५८॥ लोंसष
 शधांवोनिसत्तर ॥ वरिच्चावरिज्ञेलिहार ॥ जालायकचिनयजयकार ॥ सुमनेसुरवरवर्ष
 ति ॥५९॥ ईद्रप्रतोषलाअत्यंत ॥ झपेलाजिमाझेप्राप्यउहित ॥ हशापाललियथायै ॥ सुमित्रा

(11)

॥श्रीराम॥
1190॥

सुलभसोदे ॥५१॥ शक्तिर्षेतेकालिं॥ नमायेलोकुमंडलिं॥ हुंदुशिविधाईलागलि॥ रविमंडलिं
 नहत॥ ६०॥ पुष्पहृष्टिवांरवार॥ सौमित्रावरिकरिवेंद्रा॥ ईद्राचित्तजवलासुखनंद्रा॥ निष्ठकं
 कस्यरहित॥ ६१॥ ईद्राजितपठलियारणि॥ दिनवदनपठलिवाहिनि॥ प्राणजातातेद्यणि॥
 किर्णेऽजैशिनिस्तंडो॥ ६२॥ हिपगेलियाप्रभाहारये॥ किर्णशिमावक्तांदिनतोये॥ किंगायनहो
 तान्विसंये॥ स्वरक्षणसक्तकहि॥ ६३॥ तद्वसुउमच्छनापुध्वी॥ अंजपितिस्ताउनिपक्ति॥ ॥विजय॥
 शक्तिलपठतांहिलि॥ सेनासुमोहाकुट् ॥ ६४॥ अवयपावोनसंपुर्ण॥ परतलाविरलद्वमणा॥ ११९०॥
 वारंवारविभिषण॥ सुतिकरितसौमित्रा ५५॥ नगहनुमंताच्चास्कंदावरि॥ सौमित्रबेस
 लालेभवसरि॥ लबुजर्जरशारपंजरि॥ जालिभसेतेथवां॥ ६६॥ सुवेक्षणिरलद्वुबा॥ चालि
 लेतेकांवांक्तरगण॥ संमस्ताससांगेविभिषण॥ आल्जाचपंथेचत्ताहो॥ ६७॥ ईद्राजिताचेंवि
 शाक्तरिरा॥ सेलितनेतरषभवाक्तरा॥ ईद्रापितिलाविहिवरा॥ स्थणोनिसंगेंद्रेतते॥ ६८॥

(१८)

असोईकुउश्रीराम॥ जोस्कंदलातमनविश्राम॥ मौमित्राकारणेंपरमा॥ चिंनकांतजाहाला॥ ६३॥ सु
 ग्रीवाप्रतिरघुनंहना॥ लपेनिकुंबहेशिगोलालहमण॥ तेष्टैक्षेषंनसेलनर्तमान॥ तैंतोंनक्षेजा
 हातें॥ ७०॥ ईडजितान्वेयुध्येकरिण॥ ओह्लाशिनाफाशिबांधिलेजाण॥ शरजाकिंसेनास्यं
 पुर्ण॥ रिवेकोनत्याणेपाडिले॥ ७१॥ युद्धाईडजितविशेष॥ बाठहरासौमित्रास्य॥ जैसेमंबोलो
 नबयोध्याधित्ता॥ अशुनयनिजाणेटू॥ ७२॥ संप्रवह्नाणेरघुपत्ति॥ आपणरेवदनकरानचि
 लिं॥ ईडजितासवधुवतरितगलि॥ जोलां-
 गौमित्र॥ ७३॥ जैवित्तिकनितजक्षस्मात॥
 वाङ्मरपुढेलालेघावत॥ सांगतिभाल्लु
 सुत॥ ईडजितासवधुनियां॥ ७४॥ परमजा
 नेदलारघुकिर॥ सामोराधांवरामित्रपुत्र॥ तोसमिपदेशिवतसौमित्र॥ बाठसुर्यजयापरि॥ ७५॥
 हनुमंताच्यास्कंहिरुन॥ रवालेउतरत्तालहमण॥ सुग्रिवलाप्पिविशिषण॥ हस्तधरितदेहिंकड॥ ७६॥
 हकुहकुचलेलसुमण॥ शरजालतलत्तिहण॥ ईडेहेस्वोनिरघुनंहना॥ केलेनमनसाण्ग॥ ७७॥

(12)

श्रीराम॥
१९९॥

मगुरेनियांरजिवनेत्रा। त्रिलिङ्गेभाकंगिलासैमित्रा। द्वन्नाश्ववंधालिस्पहस्तनेत्रा। उत्तनेऽसा
 आलगिला॥ ७८। श्रीरामस्तपेसैमित्रातें। तुवांवधुनईडितातें। ब्रह्मांउभरितेपुस्थार्थें। पर
 मपराक्षमकरनियो॥ ७९। कोफासनादोपेवणि। लेतुवांवधिलासमरंगणि। देवांसहीतव
 ज्ञपणि॥ जानंदमयजाहोल॥ ८०। औसबोलानिरघुनाथ॥ सौमित्राचेमृतकिरेउनिहस्त॥
 लेपेन्द्रमहरलासमस्ता॥ जानंदतलहस्तप॥ ८१। असिष्ठिवाणिनिरघुवता॥ समस्तासमेट॥ विजय॥
 लारघुनाथ॥ राघवचनेगोरविता॥ धन्यपुरुषानि॥ ८२। तुमचा॥ ८३। पुढेवेउनिशात्रुचेत्तिर॥ तष्ठमें १९९॥
 केलानमस्त्तार॥ मगस्तपेशिलामनोहरा॥ ८४। चरामातुं॥ ८५। ओरठपुष्पीपुडाकृतन॥
 हेत्तिरठेवावेंजलन। मागोयतिलस्तालातुन॥ व्यावेलागेलशिरहें॥ ८६। सुखणासस्तपेर
 द्विविर॥ तुवेद्यजाप्तिप्रतापशुर॥ लरिसौमित्रासकरावाउपच्चार॥ देहेडाजरबाणेजाहुलिं॥ ८७॥
 मगसुरेवेषओषधिआप्पुन॥ देव्यहेहिकेलालहुमण॥ असेयावरिविसिधण॥ वर्लमानसांगतसे॥ ८८॥

(१२८)

वैसाजालासेयाम् । द्वयविरांचापरक्षम् । अैकोनियामेयः शामा । आश्चिर्यपरमकरितस्यो ॥८॥
 गद्यव्यर्द्धजितविरा । जात्मापुत्रधार्थीदिनाहिपरा । हिनकतनिदेवसमग्रा । बंहिङेषात्तले ॥८॥
 यत्परितेसुलोचना । शिरमागांयईलराडिनयना । तेसुरसक्षधालैकतांसउडजना । सैरव्यहोई
 रजत्यन्ता ॥९॥ रामविजयग्रथघच्छु । त्याकरसमित्युध्येकांड । श्रवणेपुरवित्समर्वकोड ।
 नलगेचाउभाणिकानि ॥१०॥ ब्रह्मानंहाश्रीवामा । जगद्विष्वापुण्ड्रज्ञा । श्रीधरवरहालनामा ॥
 पुष्टिकामान्त्रञ्जना ॥११॥ रामविजय । विद्यासमंहकामिकवाटज्ञाधारा । येकु
 णतिसवाजाध्यायगोड़ा ॥१२॥ श्रीदामा । जनज्ञवा । रामजयराम । श्रीरामार्पणमसु ॥१३॥



श्रीराम
१९२८

(१३)

॥ श्रीतमस्वजयकुमार ॥ गवाजायसमातः ॥



"Joint project of Mr. Salawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Sahayog Mandal, Nasik, Mumbai."

विजया
१९२८



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com